

ऊर्जा



बिहार स्थित धरणी गांव के बच्चों। यह गांव ग्रीनपीस इंडिया द्वारा स्थापित किए धरणी गांव में सौर ऊर्जाचालित स्ट्रीट लाईट। गए एक माइक्रो ग्रिड के जरिए पूरी तरह सौर ऊर्जा के सहारे चल रहा है।

स्थानीयकरण और केंद्रीकरण का भेद अगर कहीं सबसे स्पष्ट दिखाई देता है तो इस बात में कि विद्युत ऊर्जा का उत्पादन किस तरह किया जा रहा है। यहां तक कि जिन ऊर्जा स्रोतों को पहले वैकल्पिक ऊर्जा स्रोत माना जाता था - जैसे सौर एवं पवन ऊर्जा - वे भी भारी उत्पादन और डिजाइन व क्रियान्वयन को केवल मुनाफे पर केंद्रित कर देने पर विनाशकारी साबित हो सकती हैं (दाएं)।

मगर, जब इन वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों का स्तर छोटा होता है और जब उनके वास्तविक प्रयोक्ता पूरी प्रक्रिया में सहभागी होते हैं तो पुनर्नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत सामाजिक रूप से न्यायसंगत और पर्यावरण की दृष्टि से विवेकशील फैसला साबित हो सकते हैं। **ग्रीनपीस इंडिया** ने सफलतापूर्वक यह दिखा दिया है (ऊपर) कि ४५० परिवारों और ५० व्यावसायिक इकाइयों की बस्ती भी एक सौर माइक्रोग्रिड के जरिए अपनी बिजली की जखरतों को आसानी से पूरा कर सकती है।



जब 'वैकल्पिक' ऊर्जा भी एक मुसीबत बन जाती है। आंध्र प्रदेश स्थित कल्पावल्ली में बड़े पैमाने पर लगाई गई पवनचक्रियों ने भूमि प्रयोग और जल निकासी रुक्णानों को अस्त-व्यस्त कर डाला है जिससे यहां का वन्य जीवन और गांवों का अस्तित्व खतरा में पड़ने लगा है।



सौलर पैनलों और माइक्रो ग्रिड्स का इस्तेमाल करने वाले सामाजिक उद्यम **सेल्को** (बाएं) ने दक्षिण भारत के हजारों गरीब परिवारों को खुद अपनी सौर इकाइयों के सहारे बिजली हासिल करने में मदद दी है।

यहां इस बात को ज़हन में रखना जरूरी है कि ऊर्जा सुरक्षा के लिए अभिजात्य वर्ग के उपभोग में कमी लाना और ऊर्जा उत्पादन, वितरण व प्रयोग की कुशलता बढ़ाने के लिए संजीदा कोशिशें करना भी बहुत जरूरी है।

बाएं से दाएं और नीचे: सेल्को द्वारा दक्षिण भारत के घरों, स्कूलों और छोटी व्यावसायिक इकाइयों में लगाए गए सौर ऊर्जा पैनल।